रूक्साना

प्रमोद कुमार सिंह

इन उखड़े भारतीयों की भारत मज़लिस मे वो दुवारा फिर कभीं न आई। पता नहीं वो वहॉ कौन सी आस ले कर आई थी!
उससे खाने का पैसा न लिया गया। बिमल बाबू का उस दिन हर सदस्यों के सामने अपने लाल ढक्कन वाले प्लास्टिक का डब्बा खटका खटका कर गिड़गिड़ाना मुझे आज तक अक्षरशः याद हैःअपने देश की लड़की है। दो दिन पहले बर्लिन आई है। यहॉ न उसका कोई रिश्तेदार है और न ही कोई सम्बन्धी। आप से जो हो सके आँख मूँद कर इस डिब्बे मे डाल दें। ये लड़की आप का बड़ा उपकार मानेगी।
बार पर मै मिस्टर चावला के बगल मे बैठा था। अचानक उनके कहे पर आसपास के सभी ने ठहाका माराःइस साले बिमल की बजह से भारत मज़लिस की हर शनिवार की शाम चौपट हो जाती है। जब देखो अपना डिब्बा उठा कर खटखटाने लग पड़ता है। साला पैदायशी भिखमंगा है।
इस लाल ढक्कन वाले प्लास्टिक के डिब्बे मे बड़ी बरकत थी।
सान्याल बाबू के असामयिक मौत की खबर सुन कर बिमल बाबू भारत मज़लिस की एक खास बैठक बुलवाए थे। शायद ही ऐसा कोई रहा होगा जो ऑसुओं मे न नहाया हो। जिस सान्याल बाबू की जम के खिचाईयॉ होती थी खास कर के उनके अंग्रेजी और जर्मन के उच्चारणों की। उन्ही के प्रशस्तियों के गीत गाए जा रहे थे। एक मत से उनके कब्र पर फूलों के पहिये वाले घेरे की तरह हार रखने का फैसला हुआ। बिमल बाबू अपना डिब्बा सम्हाले उठ खड़े हुए। सदस्यों की उदारता के बावजूद जो पैसा इकट्ठा हो पाया उससे रथ के पहिये जैसा हार खरीदना तो सम्भव न था पर सायकल के पहिये जैसा हार खरीदा जा सकता था जिसे जर्मन भाषा मे क्रान्स नही कहा जा सकता था। अच्छी खासी मुसीबत मे सान्याल बाबू भारत मज़लिस को डाल गए थे जिससे उनकी जर्मन पत्नी ने उबारा। भारत मज़लिस मे इसी शाम उनका फोन आयाःमै अपने पति की अन्त्येष्टि पर एक भी इन्डियन को दूर या नज़दीक से नही देखना चाहती।
बहरहाल आधे घन्टे बिमल बाबू हरेक के सामने गिड़गिड़ाने के बाद अपने टेबल पर सारे सिक्के बिखरा कर गिनने बैठे। पैसे गिनने के बाद पता नही वो अपनी किन किन फाईलों मे जमा किए गए पैसों की एन्ट्री करते रहे!
बार पर बैठा शायद ही कोई रहा होगा जो अपनी नजरें बचा कर रूक्साना को जब तब न देख लेता हो। मर्दों की संस्था थी। औरतों के नाम पर इस संस्था मे तीन ही औरतें तो आती थी। यही तीन औरतें रूक्साना को घेरे बैठी थी और पता नही उससे क्या क्या पूछे जा रहीं थी!
इन तीनो को भी भारत मज़लिस के सदस्यों ने कई उपनाम दे रखे थे। इनकी स्वतंत्रता या स्वछन्दता किसी को फूटी ऑखों भी न सुहाती थी।
बिमल बाबू इस भारत मज़लिस के जेनरल सेक्रेटरी थे। रिटायरमेन्ट के बाद उनका ज्यादे समय भारत मज़लिस मे ही बीतता था। सुबास चन्द्र बोष के जमाने से बर्लिन मे रह रहे थे। सॅढसठ के हो चले थे। थे तो वो एक नम्बर के कानूनची पर उनकी आत्मीयता किसी से छुपी न थी।
अनुमानतः रूक्साना की उम्र यही कोई सत्ताईस अट्ठाईस के आसपास रही होगी। उसने गाढे हरे रंग का चमकीले सितारों से टंका ढीला ढाला सलवार कुर्त्ता पहन रखा था। वो अपना दॉया पांव अपने बॉये पांव पर चढाये अपनी जूती हवा मे लहराए जा रही थी। एक लाल रंग के दुपट्टे से उसने अपना आधा सर ढॅक रखा था। अपना सॉवला रंग उसने एक गहरे मेकअप से छुपा रखा था। लाल लिपिस्टीक से रंगे ओंठ और बगूले की तरह उसके सफेद दॉत। अन्ग्रेजी मिश्रित हिन्दी और बड़ी ही जहरीली उसकी मुस्कान।
थोड़ी देर मे बिमल बाबू दूसरे कमरे मे आए और तमाम सदस्यों को समवेत धन्यवाद बोल कर रूक्साना के हॉथ मे सैंतीस मार्क पैंतीस फेनिग पकड़ा कर सादर उसे शाम के खाने का न्यौता दिए। खाना चौधरी परिवार से आया था।
रूक्साना चुपचाप पैसे अपने बटुए मे डाल कर खाना लेने उठी। उसकी कद और काया देख कर एक बार तो सबका मस्तक ही डोल गया।
आज का खाना बिल्कूल शाकाहारी था। चावल दाल और ऊपर से काले चने और नेनूए की सब्जी। खाने के दो मार्क उसे न देने पड़े। अपना प्लेट सम्हाले वो फिर अपनी जगह पर जा बैठी। मै बार पर एक ओरेन्ज जूस का बोतल खरीद कर उसके सामने रख आया। बार पर फिर चावला साहब अपनी छोड़ेःऔर ऊपर से जब देखो खाने के नाम पर घास घूस। अरे भई ठंढी कौम है। कभी कभार मिट मूट भी तो चलना चाहिये।
खाना खाने के बाद रूक्साना भारत मज़लिस मे ज्यादे लम्बा न रही।
अपने पीछे वो भारत मज़लिस मे अपनी मीठी परफ्यूम की खुशबू तो छोड़ ही गई थी साथ साथ शनिवार के शाम के लिए एक विषय भी जो वो स्वयम थी। एक मत से उसे रंडी का फतवा दिया गया। किसी ने उसमे हेमा को देखा तो किसी ने श्रीदेवी को। किसी को उसकी बड़ी बड़ी ऑखे भालो लगीं तो किसी को उसकी चौड़ी बूंड चंगी लगी। उसके साथ एक रात बिताने की बोलियॉ भीं लगी जो पॉच सौ मार्क तक गई। ये वही कमीने थे जिनसे बिमल बाबू के डिब्बे मे कॉखने कूँखने के बावजूद भी पॉच मार्क का सिक्का तक न डाला जा सका था।
रूक्साना की उम्र मैने गलत न ऑकी थी। वो वाकई सत्ताईस वर्ष की थी। वो गुंटूर की रहने वाली थी। बर्लिन वो सीधे इटली से आई थी। इटली से पहले वो स्वीडेन मे रह चुकी थी। दो बार उसने शादी की और दो बार तलाक झेला। अपना देश तो उससे छूट ही चुका था और पता नही उससे और क्या क्या छूटना था!
बर्लिन मे वो एक इरानी स्टूडेन्ट के साथ मौलविल्सस्ट्रासे के एक हॉस्टल मे रह रही थी।
पता नही किस तरह के भविष्य का सपना उसने अपनी ऑखों मे पाल रखा था!पता नही वो बर्लिन मे क्या ढूँढने आई थी!
इसके बाद वो कई महीनो तक अपने भड़कीले कपड़ों मे अपने इरानी दोस्त की पहरेदारी मे मुझे यदा कदा यहॉ वहॉ दिखी। कभीं दूर से कभीं पास से।
मौलविल्सस्ट्रासे पर मेरे भी एकाध दोस्त रहते थे। उन्ही से मुझे पता चलता रहता था कि एक तरह से रूक्साना अपने इरानी की कैद मे ही रह रही है। वो रूक्साना को कम्बाईन्ड कीचन मे भी नही आने देता था। यहॉ तक कि जब वो फ्लोर के टवायलेट मे जाती थी तब वो फ्लोर पर मंडराता रहता था। दीन दुनिया भूला कर वो रूक्साना को अपनी आड़ दे रखा था।
भारत मज़लिस मे शायद ही शनिवार की कोई शाम रही होगी जिसमे रूक्साना का जिक्र न होता हो। उसे और उस इरानी को समवेत गालियॉ दी जाती थीःसाला खुल्लम खुल्ला हमारे देश का माल भोग रहा है और ये रंडी हमारी नाकें कटवा रही है।
कभीं कभीं मुझे भारत मज़लिस के सदस्यों पर बेहद अफसोस होता था। न तो इनमे भारतीयता रही और न ये जर्मन ही बन सके। बड़ा ही एकाकी जीवन इनके पास था और अजीब सा दोगला चरित्र भी। इनमे से अधिकांश को उनकी जर्मन पत्नियॉ भी लात मार चुकी थी। एकाध तो फिर भी

अपने रिश्तेदारों की मदद से दुबारा हिन्दुस्तान से कोई तलाकसुदा या फिर विजातीय गरीब और बेवस पत्नियॉ ब्याह लाए थे. पर बाकियों से तो उनके सगे सम्बन्धी तक रूठे बैठे थे। कईयों के पास तो ब्याह करने की उम्र तक भी न थी।
बड़ी अधीरता से ये शनिवार की शाम का इन्तजार करते रहते थे। व्हिस्की की दो पैग के बाद ही सबका असंतोष एक भद्दी भाषा मे भड़क उठता था. फिर होती थी जूता चप्पल। बड़ा ही विश्रृंखलित समाज था। एक दूसरे की खिंचाई करने से ऊपर हम न उठ पाये हैं और न कभीं उठ सकेंगे। ये हमारा राष्ट्रीय चरित्र बन चुका है।
रूक्साना के लिए मेरे पास बस एक ही दिलासा थाःशायद कोई ढंग का जर्मन उसकी सॉस चुराने वाली सुन्दरता पर मोहित हो कर उसे स्वीकार कर ले और उसे इस जरिये एक सुन्दर भविष्य मिल जाए। ये मुझे उतना असम्भाविक न लगता था।
जिस इरानी पर वो अपना बचा खुचा लूटा रही थी. उसे एक न एक दिन उसे छोड़ना ही था। ये भी हमारी तरह बस कुँवारी लड़कियों से ही निकाह का सपना देखते हैं. भले खुद कीचड़ मे सने क्यों न हो। इब्राहिम अफसारनो नाम था इस कमीने इरानी का।
अकस्मात मुझे रूक्साना का मौलविलसस्ट्रासे छोड़ने का पता लगा। वजह जानना चाहते हुए भी मै न जान पाया।
भारत मज़लिस ने राहत की सॉस लीःचलो साले मूसल्टे से रूक्साना को छुटकारा तो मिला।
इनकी तरह तरह की अटकलबाजियों से कभीं कभीं तो मै झल्ला कर रह जाता थाःफॉस ली होगी किसी लखपति बूढे जर्मन को। तैर रही होगी किसी स्विमिंग पूल मे अपने बूढे के साथ टांग पसारे या फिर कर रही होगी मुज़रा तूर्कियों के बीच
घर वापस आने के बाद गई शाम तक मुझे भारत मज़लिस की अभद्र भाषा ही नही. रूक्साना का भयावह भविष्य भी उलझाए रखता था।
उन दिनो बर्लिन मे मकबूल अहमद नाम के एक पाकिस्तानी की ऑटे चावल की दुकान टुर्मस्ट्रासे पर हुआ करती थी। मै भी मसाले वगैरह उसी की दुकान से खरीदता था। दुकान उसकी तुर्की बीवी चलाती थी। वो उर्दू भी बड़ा साफ बोल लेती थी। बगल की ही एक दुकान मे मकबूल एक ट्रेवेल एजेन्सी खोले बैठा था। जर्मन तो इस एजेन्सी मे नही आते थे. पर इन्डियन्स और पाकिस्तानियों के बीच हर महीने वो पॉच दस टिकटें बेच लेता था। उसके आमदनी का एक तीसरा जरिया भी था। वो एक एरदाल नाम के तुर्क के साथ हमारे फिल्मों को तुर्की भाषा मे डब्ड करवाने का धन्धा करता था। उसके जिम्मे हिन्दी फिल्मो के जाली कॉपी राईटस पैदा करना. लंदन से फिल्मों के जाली विडियो कैसेटस मॅगवाना और डायलोगों का अंग्रेजी मे उल्टा सीधा अनुवाद करवाने का काम था। बाकी डबिंग और डिस्ट्रिव्यूशन का काम एरदाल के हॉथों मे था। इनका ये काला धंधा तुर्की मे ही नही. पूरे यूरोप मे फैला हुआ था और ये दोनो मिलियनो मे खेल रहे थे।
बर्लिन मे एरदाल एक जाना माना नाम था। वो तुर्की माफिया का हेड भी था। वेडिंग मे कहीं उसकी ऊँची दीवारों से घिरी एक सफेद रंग की कोठी थी. जिसके अहाते मे एक परिन्दा तक जाने से घबराता था। पन्द्रह बीस शैडोस के बगैर वो अपने कोठी का अहाता तक न छोड़ता था।
इस एरदाल को मैने व्यक्तिगत पहली बार मार्टिन लूथर अस्पताल मे देखा। मेरे ही कमरे मे उसकी बेड थी। तमाम सुरक्षाओं के बावजूद कोई गरीब उसके बॉये पंजर मे एक गोली दाग दिया था। ऑपरेशन से उसकी गोली निकाली गई थी। तीन दिन तक उसके आसपास न सिर्फ उसकी मौत मंडराती रही बल्कि उसके तमाम रिश्तेदार. दोस्त. शेडोस और पुलिस वाले भी। चौथे दिन उसके आसपास मौत ने तो मंडराना बन्द कर दिया. पर दूसरे लोग नही। अस्पताल की मिशनरी नर्से बेमन इस दरिन्दे की सेवा मे मजबूरन लगी हुई थी। इन्ही मे से किसी एक से मुझे उसका नाम पता चला। उसकी दूसरी सक्षमतायें मुझे पहले से ही मालूम थीं।
एक दिन इसी अस्पताल के लाऊन्ज मे उसे घेरे न जाने कितने लोग खड़े थे। एरदाल एक चमड़े के सोफे पर बैठा हुआ था। उसके बगल मे सोने के जेवरों से लदी उसकी बीवी बैठी हुई थी। इनके तीनो बेटे रिश्तेदारों और दोस्तों के कन्धों पर धमाल मचा रहे थे। अचानक इन्ही के बीच खड़ी मुझे रूक्साना दिखी। उसकी नजर अब तक मुझ पर न पड़ी थी। उसके कपड़े मुझे कुछ ज्यादे ही भड़कीले लगे। उसने गाढे कत्थई रंग का लिपिस्टिक अपने ओंठो पर लेप रखा था। थोड़ा बहुत बाईयों वाला टच उसमे आ गया था। रह रह कर वो बड़ी मादकता से मुस्कराती या खिलखिलाती थी। बगूले के पंख जैसे सफेद उसके दॉत चमक उठते थे। पता नही उसे किसकी सरपरस्ती मिली हुई थी!
न जाने कैसे उसकी नजर मुझ पर पड़ी। झटके से उसने अपनी नजरे झुका ली। अब न उससे मुस्कराया गया और न खिलखिलाया गया। एक गाम्भीर्य उसके चेहरे पर पूत गया। अपनी सिगरेट बूझा कर मै अपने कमरे मे वापस चला आया।
इस शाम को मुझे उसका भारत मज़लिस मे एक बोतल ओरेन्ज जूश के लिए अदा के साथ शूक्रिया करना याद आया। रूक्साना मे वो स्निग्धता इन तीन वर्षो के बाद न रह गई थी. पर उसके ऑखों की शरम अभी भी नही गई थी।
दो वर्ष और गुजरा।
बर्लिन मे मेरा एक पाकिस्तानी दोस्त तो नही पर एक अच्छे परिचितों मे थाः। उसकी बीवी लंदन मे पली बढी थी। फर्राटेदार अंग्रेजी बोलती थी। पर्दा वर्दा करना नही जानती थी। इनके इकलौते बेटे का खतना हुआ था। पच्चासों मेहमानो को खाने पर बुलाया गया था। मुझे भी खाने का न्यौता मिला था।
उनके तीन कमरों का मकान मेहमानों से खचाखच भरा हुआ था। एक तिल तक रखने की जगह न थी। मुझे देखते ही मेरे दोस्त की बीवी कोले से भरा एक ग्लास पकड़ा गई जिसकी पहली घूँट लेते ही मेरा माथा चकराया। व्हिस्की को बस कोले का रंग दिया गया था। मेहमानो मे ज्यादेतर अधेड़ उम्र के पाकिस्तानी या तुर्क थे. जो कोला के नाम पर व्हिस्की का जाम पर जाम चढाये जा रहे थे। इनकी बिवियॉ बुर्का पहने एक दूसरे कमरे मे फर्श पर बैठी दबी जबान मे अपने जानने पहचानने वालियों से गप्पें लगा रही थीं। मर्दो के कमरे मे सिर्फ मेरे दोस्त की बीवी ही आती थी।
तीसरे कमरे मे एक बड़े से मेज पर न जाने कितने रंग और प्रकार का खाना सजा हुआ था। साथ मे खाली प्लेटों और चम्मचों का ढेर भी। इस कमरे मे एक सोफा भी था. जो लोगों की लाई भेंटों से गॅजा पड़ा था।
मै अपने खाने का प्लेट लेकर बालकोनी मे चला गया। वहॉ भी तीन चार लोग खड़े सिगरेटें फूँक रहे थे. फिर भी वहॉ कमरे की अपेक्षा ज्यादे जगह थी। मै अभीं खाना खा ही रहा था कि मुझे लगा जैसे पहले वाले कमरे मे भूचाल आ गया हो। सिर्फ एक बार मे ऊचक कर देखा. लोग बाग जबर्दस्ती दीवारों की तरफ सरक सरक कर कमरे के बीचोबीच थोड़ी जगह बना रहे थे। मै बालकोनी मे ही खाना खाता रहा।
कुछ ही देर बाद मुझे तालियों की गड़गड़ाहट सुनाई दी और फिर पूरे वाल्यूम पर एक लयदार तुर्की गाना। मै अपनी जगह पर ही डटा रहा। तभी मुझे ढूँढता मेरा दोस्त धक्कम धूक्की करता बालकोनी मे आयाःभाई जान! आप यहॉ खड़े झक्क मार रहे है और उस सामने वाले कमरे मे बाऊख टान्स का मजा गैर लूटे जा रहे हैं। आप के ही कौम की लड़की है। कम से कम एक ही झलक तो मार लें।

कौम का नाम सुनते ही मै अपना अधभरा प्लेट बालकोनी के एक मेज पर रख कर आनन फानन पहले वाले कमरे की ओोर बढा। दरवाजे तक ही पहुँचा था कि नाचने वाली लड़की को देख कर सकते मे आ गया। ये रूक्साना थी। नाभी से काफी नीचे उसने एक ढीला ढाला सलवार पहन रखा था. जो उसके टखने तक आता था। उसने एक बेहद भड़कीली छोटी सी चोली पहन रखी थी. जिसमे उसके स्तन ठूँस ठॉस कर कैद किए गए थे फिर भी उसका आधे से भी ज्यादे स्तन चोली से बाहर था। अपने बालों को उसने एक स्कार्फ से बॉध रखा था। उसका पूरा पेट खुला हुआ था. जो वो एक नागिन की तरह थिरकाये जा रही थी और वो भी अजीब सी कामुक मुद्रा मे।

मेहमानों के मुँह से लार टपक रहे थे। इसके पहले की रूक्साना की नज़र मुझ पर पड़तीअपने दोस्त से माफी मॉग कर मैने ये महफिल छोड़ दी और घर वापस चला आया। गई रात तक रूक्साना का चेहरा मेरे ऑखों के सामने नाचता रहा।

बाद के दिनो मे मुझे अपने दोस्त के ही एक फोन से पता चला कि रूक्साना बर्लिन मे ही रहने वाले एक जालसाज तुर्की की रखैल है. जो अपने कौम की एक औरत से शादीसुदा और उसके चार बच्चों का बाप भी है। अंकारा मे उसकी एक तलाकसुदा बीबी है. जिससे उसे एक बेटा है। अपने बेटे को पता नही कौन सा तिकड़म लगा कर वो बर्लिन ले आया है. पर घर मे उसकी हैसियत एक नौकर की तरह है। अपनी सौतेली मॉ की तिमारदारी मे चौबीस घन्टे लगा रहता है।

रूक्साना को उसने अपने बेसमेन्ट मे एक कमरा दे रखा है जिसमे न तो कोई खिड़की है न दरवाजा ही। ड्राईन्गरूम के एक कोने मे फर्श पर बिछी कालीन के नीचे एक चौकोर सा पल्ला है। इसी रास्ते रूक्साना खाने पीने या नहाने के लिए एक सीढी के जरिये ऊपर आती है। कहने को तो वो उसे आबला यानि दीदी कहता है पर तबियत से उसे.

ये सब जानने के बावजूद भी मैने रूक्साना को कभीं एक रंडी की शक्ल मे याद न किया। इसकी सिर्फ एक वजह थी और वो ये थी कि उसके ऑखों की शर्म और हया अपने बत्तीसवें बरस मे भी न गई थी। और जब तक एक औरत की ऑखों मे ये दो बातें होती है. मै उसे रंडी का नाम नही दे सकता. भले ही वो एक पेशेवर रंडी ही क्यों न हो। फिर मै सारे दोष हालातों पर या किसी एक जिद्दी सपने पर मढता हूँ. जिनके सामने हमारा वश कभीं न चला है। हालात और सपने बड़े व्यक्तिगत होते हैं और वहॉ किसी बहस की गुंजायश नही होती है।

रूक्साना के हालातों और उसके सपनों को मै करीब से तो कभीं न जान सका. पर उसके हर चरण मे मै उससे अवश्य मिला। अब मुझे बर्लिन मे उसका उद्धार सम्भव न लगता था। पता नही ये सारे फैसले उसके अपने थे या उस पर लादे गए थे!एक कटी पतंग की नाई वो यदा कदा आसमान मे दिखती रही।

अभीं एक वर्ष भी न गुजरा था कि वो मुझे एक पीप शो मे दिखी।

एक गोलाकार कमरे को घेरे न जाने कितने कैबिन्स वहॉ थे. जिनमे बस खड़े खड़े एक शीशेदार खिड़की से शो देखा जा सकता था। कैबिनो के दरवाजों के हैन्डल के पास एक छेद थी जिनमे पॉच मार्क का सिक्का डालने पर वो खुल जाते थे। दरवाजों को फिर अन्दर से बन्द किया जा सकता था।

इस गोलाकार कमरे मे एक गोलाकार पलंग पर एक भरे बदन की आदमजात नंगी औरत अधलेटी एक हॉथ से अपने स्तन मसले जा रही थी और दूसरे से अपने गुप्तांग छेड़े जा रही थी। पलन्ग पर के चादर और तकियों पर गुलाबी गिलाफ चढे थे। पूरा कमरा गुलाबी रोशनी मे नहाया हुआ था।

शुरू मे इस औरत की पीठ मेरे सामने थी। पलन्ग एक हल्के रफ्तार से एक गोलाईदार चक्कर काट रहा था। जब इस औरत का चेहरा मेरे ऑखों के सामने आया तो मुझे उसे पहचानने मे एक पल भी न लगा और शायद उसे भी नही। झट से उसने अपने दोनो हॉथों से अपना चेहरा छुपा लिया।

रूक्साना की जवानी ढलने को आई थी। वो मुझे कुछ बीमार सी भी लगी।

उससे मिलने का एक बार फिर संयोग मेरे भाग्य मे बदा था और वो भी छ महीने के अन्दर।

अचानक मेरे पास एक डाक्टर का फोन आया और मुझे अनुवाद के लिए औरतों के एक वार्ड मे जाना पड़ा। एक दिन पहले एक इन्डियन औरत को वहॉ भर्ती करवाया गया था जिसे जर्मन बिल्कुल ही नही आती थी। ये मेरे लिए कोई नई बात नही थी। इसके पहले भी मै कई बार अस्पताल के तमाम दूसरे वार्डो मे बुलवाया जा चुका था। जब मै डाक्टर के साथ पेशेन्ट के पास पहुँचा तो वहॉ रूक्साना को पड़ा देख कर वाकई मेरा मन डूबने को आया। उसका नाम ले कर सबसे पहले मैने उसका हाल चाल पूछा। उसने अपना चेहरा मोड़ लिया फिर भी मै उसके गालों का थरथराना देख रहा था। उससे अपनी रूलाई न रोकी जा रही थी। वो रोए चली जा रही थी। उसके पेट के काफी निचले भाग मे रह रह कर एक जानलेवा दर्द उभर जाता था। डाक्टरों की एकमत से बस एक ही राय थी कि उसे कोई वायरल इनफेक्शन है।

हमारे अस्पताल मे रूक्साना कुल पॉच दिन रही। उसकी हर तरह से जॉचें की गई. पर उसकी बीमारी की डायगनोशिश न हो पाई।

काम के बाद मै रोज ही उससे मिलने गया. पर वो मुझे बेसूध ही पड़ी मिली। कोई न कोई ड्रग दे कर उसे बेसूध कर दिया जाता था। छट्ठे दिन उसका बिस्तर खाली था।

ठंढ मे कॉपते एक हल्का सा शाल ओढे वो हमारे अस्पताल मे अकेले ही आई थी। न उसके पास कोई कागजात था और न ही पैसा। एडमिशन वार्ड मे वो बस अपना नाम ही बता पाई फिर उसके पेट का दर्द ऐसा उभरा कि बिना किसी फॉर्मेल्टी के उसे भर्ती कर लिया गया।

जब उसने अपनी ऑखें मूँदी तो उसकी किसी तरह से भी शिनाख्त सम्भव ही न थी। बौन स्थित भारतीय दूतावास को भी किसी द्विविधा मे नही डाला गया।

बर्लिन के ही एक लोकल समाचार पत्र मे उसके शव की तश्वीर और उसका नाम छाप कर उसे जानने या पहचानने वालों को गुहार लगाई गई. पर उसे चाहने वाले या भोगने वाले चूँ तक न कसे। भारत मज़लिस ने भी राहत की सॉस ली। अब उनकी नाक कटवाने वाली रूक्साना बर्लिन ही नही इस दुनिया को भी छोड़ कर जा चुकी थी। मै भी चुप ही रहा। उसके दो चार पड़ावों के अलावे मै स्वयम उसके बारे कुछ भी नही जानता था।

उसकी लाश किसी सरकारी ठंढी अभिलेखागार मे रखवा दी गई. जो शायद आज भी वहीं किसी ताखे मे पड़ी होगी।

बर्लिन के कब्रगाहों मे सबसे उपेक्षित कब्र उन्ही के होते है. जिनके सिरहाने गड़े एक आम से रूखड़े सिल पर बस इतना ही खुदा होता हैःसिविलियन। वहॉ मेरे पैर जैसे बँध कर रह जाते हैं। न जाने रूक्साना को ये सम्मान भी कब मिल पाएगा!